ज्ञानशाला ज्ञानार्थी पाठ्यक्रम - भाग 5

शिशु संस्कार बोध

घर-घर जागे सद्संस्कार : ज्ञानशाला का यह उपहार

आशीर्वचन

तेरापंथ समाज की एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है - ज्ञानशाला। इसके माध्यम से बालक-बालिकाओं में जैन तत्त्व विद्या को आत्मसात् कराने तथा सुसंस्कारों के बीजारोपण का प्रयास किया जाता है। यह गतिविधि बहुत निष्पत्तिपूर्ण प्रतीत हो रही है। जो पुरुष तथा महिला कार्यकर्ता इस गतिविधि के पवित्र संचालन में सहयोग देते हैं, वे बाल पीढ़ी के निर्माण में अपना योगदान देते हैं।

ज्ञानशाला को मैं अत्यंत उपयोगी मानता हूँ, इसलिए साधु-साध्वियाँ, समण श्रेणी, श्रावक-श्राविकाएँ -- सब इस गतिविधि को भावात्मक एवं क्रियात्मक यथोचित सहयोग देने का प्रयास करें।

शुभाशंसा।

5 मई, 2012
बालोतरा

आचार्य महाश्रमण

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी पाठ्यक्रम - भाग 5

शिशु संस्कार बोध

संपादन :
मंत्री मुनि सुमेरमल (लाडनूं)
मुनि उदित कुमार

प्रकाशन एवं नियोजन :
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
(ज्ञानशाला प्रकोष्ठ)
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता - 700001
फोन : (033) 2235 7956 / 2234 3598
इमेल : info@jstmahasabha.org
वेबसाइट : www.jstmahasabha.org

संस्करण : 2016

घर-घर जागे सद्संस्कार : ज्ञानशाला का यह उपहार

❖❖

- आज का शिशु ही कल का समाज है।
- माता-पिता का व्यवहार ही शिशु की संस्कारशाला है।
- धार्मिक संस्कारों से ही व्यवहार व अध्यात्म शुद्ध रह सकता है।
- शिशु अनुकरणप्रिय है। उसे जैसा बनाना चाहते हो, वैसा पहले खुद बनो।
- शिशु वह सर्वग्राही भूमि है, जिस पर सब प्रकार के बीज बोये जा सकते हैं।
- शिशु में असीम क्षमता है, उसे नजरअंदाज मत करो, उसके विकास में सहायक बनो।
- जन्म के समय शिशु न अपराधी है और न उपकारी। उसमें ये संस्कार यहीं से मिलते हैं।
- शिशु स्वयं में एक कोरा (सफेद) कागज होता है। उस पर चाहे जैसे संस्कारों के चित्र उकेरे जा सकते हैं।
- शिशु स्वयं में एक स्वच्छ आरिसा (कांच) है, जिसमें माता, पिता व पूरे परिवार के व्यवहार का प्रतिबिंब देखा जा सकता है।

– मंत्री मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अनुक्रम	पृष्ठ
1.	छात्र-प्रतिज्ञा	3
2.	पच्चीस बोल (19-25)	5
3	अर्हत् वन्दना	12
4.	महाप्रज्ञ अष्टकम्	15
5.	आचार्य श्री महाप्रज्ञ	17
6.	आचार्य श्री महाश्रमण	19
7.	सामान्य ज्ञान	21
8.	प्रेक्षाध्यान : उपयोगी प्रयोग	23
9.	विद्यार्थी अणुव्रत	24

SHISU SANSKAR BODH (VOLUME - 5)
Rs. 10/-

❖❖❖

पाठ - 1

छात्र-प्रतिज्ञा CHHĀTRA PRATIGYĀ

जीवन हम आदर्श बनाएं,
उन्नति पथ पर बढ़ते जाएं।
क्यों न छात्र गुण-पात्र कहाएं?
जीवन हम आदर्श बनाएं।।

उच्च-उच्च आचरण वरेंगे,
दुराचार से सदा डरेंगे।
आत्मशक्ति का परिचय देंगे,
नहीं कहीं दुर्बलता लाएं।।1।।

संयम-झूले में झूलेंगे,
तत्व अहिंसा को छू लेंगे।
नहीं नम्रता को भूलेंगे,
अनुशासन के नियम निभाएं।।2।।

नहीं किसी को गाली देंगे,
नहीं किसी से घृणा करेंगे।
बोल जबान नहीं बदलेंगे,
पद-लोलुपता नहीं बढ़ाएं।।3।।

झूठ-कपट से सदा बचेंगे,
जूआ-चोरी नहीं रचेंगे।
पर-निंदा में नहीं पचेंगे,
आत्म-विजय ही लक्ष्य बनाएं।।4।।

मद्यपान में नहीं पड़ेंगे,
भांग तम्बाकू से न भिड़ेंगे।
बुरी आदतों (के) साथ लड़ेंगे,
ईर्ष्या-मत्सर-मान मिटाएं।।5।।

Jeewan Ham Ādarsh Banāyen,
Unnati Path Par Badhate Jāyen
Kyon Na Chhātra Gun-Pātra Kahāyen?
Jeewan Ham Ādarsh Banāyen.

1. Ucch Ucch Ācharan Varengen,
Durāchār Se Sadā Darengen.
Ātmashakti Kā Parichaye Dengen,
Nahin Kahin Durbalatā Lāyen.

2. Sanyam Jhoole Mein Jhoolenge,
Tatwa Ahinsa Ko Chhoo lenge.
Nahin Namratā Ko Bhoolenge,
Anushāsan Ke Niyam Nibhāyen.

3. Nahin Kisee Ko Gālee Denge,
Nahin Kisee Se Ghrinā Karenge.
Bol Jabān Nahin Badlenge,
Pad Lolupta Nahin Badhāyen.

4. Jhooth Kapat Se Sadā Bachenge,
Jooa Chori Nahin Rachenge.
Par Nindā Mein Nahin Pachenge,
Ātma-Vijay Hee Lakshya Banāyen.

5. Madyapān Mein Nahin Padenge,
Bhāng-Tambāku Se Na Bhidenge
Buri Ādaton (Ke) Sath Ladenge,
Irshyā-Matsar-Mān Mitāyen.

आस्तिकता को आश्रय देंगे,
नास्तिकता न पनपने देंगे।
त्याग-मार्ग में तन-मन देंगे,
सद्गुरु में श्रद्धा रख पाएं।।6।।

6. Āstikatā Ko Ashray Denge,
Nāstikatā Na Panapane Denge.
Tyāg-Mārg Mein Tan-Man Denge,
Sadguru Mein Shraddhā Rakh Pāyen.

सहनशील बन वीर बनेंगे,
सच्ची अच्छी सीख सुनेंगे।
धार्मिकता का पाठ पढ़ेंगे,
'तुलसी' अणुव्रत-पथ पर आएं।।7।।

7. Sahansheel Ban Veer Banenge,
Sacchee Achchhee Seekh Sunenge.
Dhārmiktā kā Pāth Padhenge
'Tulsi' Anuvrat-Path Par Āyen.

आपको करना है :

1. छात्र-प्रतिज्ञा क्रमबद्ध एवं लयबद्ध सीखनी है।

You have to do :

1. Chhatra Pratigya to be learnt in tune and in order.

❖❖❖

पाठ - 2

पचीस बोल (19 से 25)

Pachees Bol (19-25)

उन्नीसवां बोल : ध्यान चार

1. आर्त्त ध्यान
2. रौद्र ध्यान
3. धर्म्य ध्यान
4. शुक्ल ध्यान

बीसवां बोल : षट् द्रव्यों का ज्ञान

1. धर्मास्तिकाय

द्रव्य से – एक द्रव्य।
क्षेत्र से – लोक-परिमाण।
काल से – अनादि और अनन्त।
भाव से – अरूपी।
गुण से – गतिशील पदार्थों की गति में अपेक्षित सहायता करना।

2. अधर्मास्तिकाय

द्रव्य से – एक द्रव्य।
क्षेत्र से – लोक-परिमाण।
काल से – अनादि और अनंत।
भाव से – अरूपी।
गुण से – पदार्थों के स्थिर रहने में अपेक्षित सहायता करना।

3. आकाशास्तिकाय

द्रव्य से – एक द्रव्य।
क्षेत्र से – लोक-अलोक-परिमाण।
काल से – अनादि और अनन्त।
भाव से – अरूपी
गुण से – समस्त पदार्थों को अवकाश देना, स्थान देना। भाजन गुण।

Uneeswān Bol : Dhyān chār

1. Ārtta Dhyān
2. Raudra Dhyān
3. Dharmya Dhyān
4. Shukla Dhyān

Beeswān Bol : Shat Dravyon Kā Gyān

1. Dharmāstikāy

Dravya Se - Ek Dravya
Kshetra Se - Lok Parimān
Kāl Se - Anādi aur Anant
Bhāv Se - Aroopee
Gun Se - Gatisheel Padārthon Ki Gati Mein Apekshit Sahāyatā Karnā

2. Adharmāstikāy

Dravya Se - Ek Dravya
Kshetra Se - Lok Parimān
Kāl Se - Anādi aur Anant
Bhāv Se - Aroopee
Gun Se - Padārthon Ke Sthir Rahne Mein Apekshit Sahāyatā Karnā

3. Ākāshāstikāy

Dravya Se - Ek Dravya
Kshetra Se - Lok-Alok-Parimān
Kāl Se - Anādi aur Anant
Bhāv Se - Aroopee
Gun Se - Samast Padārthon Ko Avkāsh Denā, Sthān Denā. Bhājan Gun.

4. काल

द्रव्य से – अनन्त द्रव्य।
क्षेत्र से – अढ़ाई द्वीप परिमाण।
काल से – अनादि और अनन्त।
भाव से – अरूपी।
गुण से – वर्तन गुण।

5. पुद्गलास्तिकाय

द्रव्य से – अनन्त द्रव्य।
क्षेत्र से – लोक-परिमाण।
काल से – अनादि और अनन्त।
भाव से – रूपी।
गुण से – गलन-मिलन स्वभाव।

6. जीवास्तिकाय

द्रव्य से – अनन्त द्रव्य।
क्षेत्र से – लोक-परिमाण।
काल से – अनादि और अनन्त।
भाव से – अरूपी।
गुण से – चैतन्य गुण।

इक्कीसवां बोल : राशि दो

1. जीव राशि 2. अजीव राशि

बाईसवां बोल : श्रावक के बारह व्रत

1. अहिंसा अणुव्रत
2. सत्य अणुव्रत
3. अस्तेय अणुव्रत
4. ब्रह्मचर्य अणुव्रत
5. अपरिग्रह अणुव्रत
6. दिग् परिमाण व्रत
7. भोगोपभोग-परिमाण व्रत
8. अनर्थदंड विरमण व्रत
9. सामायिक व्रत
10. देशावकाशिक व्रत

4. Kāl

Dravya Se - Anant Dravya
Kshetra Se - Adhāi Dweep Parimān
Kāl Se - Anādi aur Anant
Bhāv Se - Aroopee
Gun Se - Vartan Gun

5. Pudgalāstikāy

Dravya Se - Anant Dravya
Kshetra Se - Lok Parimān
Kāl Se - Anādi aur Anant
Bhāv Se - Roopee
Gun Se - Galan Milan Swabhāv

6. Jeevāstikāy

Dravya Se - Anant Dravya
Kshetra Se - Lok Parimān
Kāl Se - Anadi Aur Anant
Bhāv Se - Aroopee
Gun Se - Chaitanya Gun

Ikkiswān Bol : Rāshi Do

1. Jeev Rāshi 2. Ajeev Rāshi

Bāiswān Bol : Srāvak Ke Bārah Vrat

1. Ahimsā Anuvrat
2. Satya Anuvrat
3. Asteya Anuvrat
4. Brahmacharya Anuvrat
5. Aparigrah Anuvrat
6. Dig Parimān Vrat
7. Bhogopabhog Parimān Vrat
8. Anarthadand Virman Vrat
9. Sāmāyik Vrat
10. Deshāvakāshik Vrat

11. पौषधोपवास व्रत
12. यथासंविभाग व्रत

तेईसवां बोल : पांच महाव्रत

1. अहिंसा महाव्रत
2. सत्य महाव्रत
3. अस्तेय महाव्रत
4. ब्रह्मचर्य महाव्रत
5. अपरिग्रह महाव्रत

चौबीसवां बोल : भांगा 49

तीन करण तीन योग से।
तीन करण – करना, कराना, अनुमोदन करना।
तीन योग – मन, वचन, काया।

अंक 11 का भांगा 9

यहां पहले अंक 1 का अर्थ है एक करण और दूसरे अंक 1 का अर्थ है एक योग। अर्थात् एक करण और एक योग से नौ भांगे हो सकते हैं, जैसे –

1. (i) करूं नहीं मन से।
   (ii) करूं नहीं वचन से।
   (iii) करूं नहीं काया से।
2. (iv) कराऊं नहीं मन से।
   (v) कराऊं नहीं वचन से।
   (vi) कराऊं नहीं काया से।
3. (vii) अनुमोदूं नहीं मन से।
   (viii) अनुमोदूं नहीं वचन से।
   (ix) अनुमोदूं नहीं काया से।

अंक 12 का भांगा 9

यहां पहले अंक 1 का अर्थ है एक करण और दूसरे अंक 2 का अर्थ है दो योग। अर्थात् एक करण और दो योग से 9 भांगे हो सकते हैं, जैसे –

11. Paushdhopavās Vrat
12. Yathasamwibhāg Vrat

Teiswān Bol : Pānch Mahāvrat

1. Ahimsa Mahāvrat
2. Satya Mahāvrat
3. Asteya Mahāvrat
4. Brahmacharya Mahāvrat
5. Aparigrah Mahāvrat

Chaubiswān Bol : Bhāngā 49

Teen Karan Teen Yog Se.
Teen Karan - Karnā, Karanā, Anumodan Karnā
Teen Yog - Man, Vachan, Kāyā

Ank 11 Kā Bhāngā 9

Yahan Pahle Ank 1 kā Arth Hai Ek Karan aur doosre Ank 1 Kā Arth Hai Ek Yog. Arthāt Ek Karan aur Ek yog Se Nau Bhānge Ho Sakte Hain, Jaise -

1. (i) Karoon Nahin Man Se.
   (ii) Karoon Nahin Vachan Se.
   (iii) Karoon Nahin Kāyā Se.
2. (iv) Karāoon Nahin Man Se.
   (v) Karāoon Nahin Vachan Se.
   (vi) Karāoon Nahin Kāyā Se.
3. (vii) Anumodoon Nahin Man Se.
   (viii) Anumodoon Nahin Vachan Se.
   (ix) Anumodoon Nahin Kāyā Se.

Ank 12 Kā Bhāngā 9

Yahān Pahle Ank 1 Kā Arth Hai Ek Karan aur Doosre Ank 2 Kā Arth Hai 2 Yog. Arthāt Ek Karan aur do yog se 9 Bhānge Ho Sakte Hain, Jaise -

1. (i) करूं नहीं – मन से, वचन से।
(ii) करूं नहीं – मन से, काया से।
(iii) करूं नहीं – वचन से, काया से।
2. (iv) कराऊं नहीं – मन से, वचन से।
(v) कराऊं नहीं – मन से, काया से।
(vi) कराऊं नहीं – वचन से, काया से।
3. (vii) अनुमोदूं नहीं – मन से, वचन से।
(viii) अनुमोदूं नहीं – मन से, काया से।
(ix) अनुमोदूं नहीं – वचन से, काया से।

अंक 13 का भांगा 3

यहां पहले अंक 1 का अर्थ है एक करण और दूसरे अंक 3 का अर्थ है तीन योग। अर्थात् एक करण और तीन योग से 3 भांगे हो सकते हैं, जैसे –

(1) करूं नहीं – मन से, वचन से, काया से।

(2) कराऊं नहीं – मन से, वचन से, काया से।

(3) अनुमोदूं नहीं – मन से, वचन से, काया से।

अंक 21 का भांगा 9

यहां पहले अंक 2 का अर्थ है दो करण और दूसरे अंक 1 का अर्थ है एक योग। अर्थात् दो करण और एक योग से 9 भांगे हो सकते हैं, जैसे –

1. (i) करूं नहीं, कराऊं नहीं – मन से।
(ii) करूं नहीं, कराऊं नहीं – वचन से।
(iii) करूं नहीं, कराऊं नहीं – काया से।

2. (iv) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से।
(v) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं – वचन से।
(vi) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं – काया से।

1. (i) Karoon Nahin – Man Se, Vachan Se.
(ii) Karoon Nahin – Man Se, Kāyā Se.
(iii) Karoon Nahin – Vachan Se, Kāyā Se.

2. (iv) Karaoon Nahin – Man Se, Vachan Se.
(v) Karaoon Nahin – Man Se, Kāyā Se.
(vi) Karaoon Nahin – Vachan Se, Kāyā Se.

3. (vii) Anumodoon Nahin – Man Se, Vachan Se.
(viii) Anumodoon Nahin – Man Se, Kāyā Se.
(ix) Anumodoon Nahin – Vachan Se, Kāyā Se.

Ank 13 Kā Bhāngā 3

Yahān Pahle Ank 1 Kā Arth Hai Ek Karan Aur Doosre Ank 3 Ka Arth Hai Teen Yog. Arthat Ek Karan Aur Teen Yog Se 3 Bhānge Ho Sakte Hain, Jaise -

(i) Karoon Nahin – Man Se, Vachan Se, Kāyā Se.
(ii) Karāoon Nahin – Man Se, Vachan Se, Kāyā Se.
(iii) Anumodoon Nahin – Man Se, Vachan Se, Kāyā Se.

Ank 21 Kā Bhāngā 9

Yahān Pahle Ank 2 Kā Arth Hai Do Karan Aur Doosre Ank 1 Kā Arth Hai Ek Yog. Arthāt Do Karan Aur Ek Yog Se 9 Bhange Ho Sakte Hain. Jaise -

1. (i) Karoon Nahin, Karāoon Nahin – Man Se.
(ii) Karoon Nahin, Karāoon Nahin – Vachan Se.
(iii) Karoon Nahin, Karāoon Nahin – Kāyā Se.

2. (iv) Karoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se.
(v) Karoon Nahin, Anumodoon Nahin – Vachan Se.
(vi) Karoon Nahin, Anumodoon Nahin – Kāyā Se.

3. (vii) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से।

(viii) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – वचन से।

(ix) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – काया से।

3. (vii) Karaoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se.

(viii) Karaoon Nahin, Anumodoon Nahin – Vachan Se.

(ix) Karoon Nahin, Anumodoon Nahin – Kāyā Se.

अंक 22 का भांगा 9

यहां पहले अंक 2 का अर्थ है दो करण और दूसरे अंक 2 का अर्थ है दो योग। अर्थात् दो करण और दो योग से 9 भांगे हो सकते हैं, जैसे –

1. (i) करूं नहीं, कराऊं नहीं – मन से, वचन से।

(ii) करूं नहीं, कराऊं नहीं – मन से, काया से।

(iii) करूं नहीं, कराऊं नहीं – वचन से, काया से।

2. (iv) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से, वचन से।

(v) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से, काया से।

(vi) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं – वचन से, काया से।

3. (vii) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से, वचन से।

(viii) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से, काया से।

(ix) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – वचन से, काया से।

Ank 22 Kā Bhāngā 9

Yahān Pahle Ank 2 Kā Arth Hai Do Karan Aur doosre Ank 2 Kā Arth Hai Do Yog. Arthāt Do Karan Aur Do Yog Se 9 Bhānge Ho Sakte Hain, Jaise –

1. (i) Karoon Nahin, Karāoon Nahin – Man Se, Vachan Se.

(ii) Karoon Nahin, Karāoon Nahin – Man Se, Kāyā Se.

(iii) Karoon Nahin, Karāoon Nahin – Vachan Se, Kāyā Se.

2. (iv) Karoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se, Vachan Se.

(v) Karoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se, Kāyā Se.

(vi) Karoon Nahin, Anumodoon Nahin – Vachan Se, Kāyā Se.

3. (vii) Karāoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se, Vachan Se.

(viii) Karāoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se, Kāyā Se.

(ix) Karāoon Nahin, Anumodoon Nahin – Vachan Se, Kāyā Se.

अंक 23 का भांगा 3

यहां पहले अंक 2 का अर्थ है दो करण और दूसरे अंक 3 का अर्थ है तीन योग। अर्थात् दो करण और तीन योग से 3 भांगे हो सकते हैं, जैसे –

Ank 23 Kā Bhāngā 3

Yahān Pahle Ank 2 Kā Arth Hai Do Karan Aur Doosre Ank 3 Kā Arth Hai Teen Yog. Arthāt Do Karan Aur Teen Yog Se 3 Bhāngen Ho Saktā Hain, Jaise –

1. करूं नहीं, कराऊं नहीं – मन से, वचन से, काया से।
2. करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से, वचन से, काया से।
3. कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से, वचन से, काया से।

1. Karoon Nahin, Karāoon Nahin – Man Se, Vachan Se, Kāyā Se.
2. Karoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se, Vachan Se, Kāyā Se.
3. Karāoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se, Vachan Se, Kāyā Se.

अंक 31 का भांगा 3

यहां पहले अंक 3 का अर्थ है तीन करण और दूसरे अंक 1 का अर्थ है एक योग। अर्थात् तीन करण और एक योग से 3 भांगे हो सकते हैं, जैसे –

(1) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से।
(2) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – वचन से।
(3) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – काया से।

Ank 31 Kā Bhāngā 3

Yahān Pahle Ank 3 Kā Arth Hai Teen Karan Aur Doosre Ank 1 Kā Arth Hai Ek Yog. Arthat Teen Karan Aur Ek Yog Se 3 Bhānge Ho Sakte Hain, Jaise –

1. Karoon Nahin, Karāoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se.
2. Karoon Nahin, Karāoon Nahin, Anumodoon Nahin – Vachan Se.
3. Karoon Nahin, Karāoon Nahin, Anumodoon Nahin – Kāyā Se.

अंक 32 का भांगा 3

यहां पहले अंक 3 का अर्थ है तीन करण और दूसरे अंक 2 का अर्थ है दो योग। अर्थात् तीन करण और दो योग से 3 भांगे हो सकते हैं, जैसे –

(1) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से, वचन से।
(2) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से, काया से।
(3) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – वचन से, काया से।

Ank 32 Kā Bhāngā 3

Yahān Pahle Ank 3 Kā Arth Hai Teen Karan Aur Doosre Ank 2 Kā Arth Hai 2 Yog. Arthāt 3 Karan Aur 2 Yog Se 3 Bhānge Ho Sakte Hain, Jaise –

1. Karoon Nahin, Karāoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se, Vachan Se.
2. Karoon Nahin, Karāoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se, Kāyā Se.
3. Karoon Nahin, Karāoon Nahin, Anumodoon Nahin – Vachan Se, Kāyā Se.

अंक 33 का भांगा 1

यहां पहले अंक 3 का अर्थ है तीन करण और दूसरे अंक 3 का अर्थ है तीन योग। अर्थात् तीन करण और तीन योग से 1 भांगा हो सकता है, जैसे –

Ank 33 Kā Bhāngā 1

Yahān Pahle Ank 3 Kā Arth Hai Teen Karan Aur doosre Ank 3 Kā Arth Hai Teen Yog. Arthat Teen Karan Aur Teen Yog Se 1 Bhāngā Ho Saktā Hai, Jaise –

❖❖

(1) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं – मन से, वचन से, काया से।

1. Karoon Nahin, Karāoon Nahin, Anumodoon Nahin – Man Se, Vachan Se, Kāyā Se.

पच्चीसवां बोल : चारित्र पांच

1. सामायिक चारित्र
2. छेदोपस्थापनीय चारित्र
3. परिहार विशुद्धि चारित्र
4. सूक्ष्मसम्पराय चारित्र
5. यथाख्यात चारित्र

Pacheeswān Bol : Chāritra Pānch

1. Sāmāyik Chāritra
2. Chhedopasthāpaniya Chāritra
3. Parihār Vishuddhi Chāritra
4. Sukshma Samparāy Chāritra
5. Yathākhyāt Chāritra

आपको करना है :

1. ये बोल क्रमबद्ध रूप में सीखने हैं।

You have to do :

You must learn these Bols in order.

पाठ - 3

अर्हत् वन्दना	ARHAT VANDANĀ

1. णमो अरहंताणं
   णमो सिद्धाणं
   णमो आयरियाणं
   णमो उवज्झायाणं
   णमो लोए सव्वसाहूणं

1. Namo Arhantānam
   Namo Siddhānam
   Namo Ayariyānam
   Namo Uvajhāyānam
   Namo Loye Savva Sahoonam

2. एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पाव पणासणो।
   मंगलाणं च सव्वेसिं, पढ़मं हवइ मंगलं।

2. Eso Panch Namukkāro,
   Savva Pāva Panāsano
   Mangalānam Cha Savvesim,
   Padhamam Havai Mangalam.

3. जे य बुद्धा अइक्कंता, जे य बुद्धा अणागया।
   संती तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा।।

3. Je Ya Buddhā Aikkantā,
   Je Ya Buddha Anāgayā,
   Santee Tesim Paithānam,
   Bhooyānam Jagayi Jahā.

4. से सुयं च मे, अज्झत्थियं च मे
   बंध पमोक्खो तुज्झ अज्झत्थेव।

4. Se Suyam Cha Me, Ajhathiyam Cha me
   Bandha Pamokho Tujjh Ajjhattheva.

5. पुरिसा ! तुममेव तुमं मित्तं।
   किं बहिया मित्तमिच्छसि ?

5. Purisā! Tum Meva Tumam Mittam,
   Kim Bahiyā Mittamicchasi?

6. पुरिसा ! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ,
   एवं दुक्खा पमोक्खसि।

6. Purisā! Attāna Meva Abhinigijjha,
   Evam Dukkhā Pamokkhasi.

7. पुरिसा ! तुमंसि नाम सच्चेव,
   जं 'हंतव्वं' ति मन्नसि।

7. Purisā! Tumansi Nām Sachcheva,
   Jang 'Hantavvam' Ti Mannasi.

8. सव्वे पाणा ण हंतव्वा –
   एस धम्मे धुवे, णिइए सासए।

8. Savve Pānā Na Hantavvā –
   Esa Dhamme Dhuve, Niyie Sāsaye.

9. पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि।

9. Purisā! Sachchameva Samabhijānāhi.

10. सच्चं भयवं।

10. Sachcham Bhayavam.

11. सच्चं लोयम्मि सारभूयं।

11. Sachcham Loyammi Sārbhooyam.

12. इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं।

12. Inameva Niggantham Pāvyanam Sachcham.

13. उट्ठिए णो पमायए।

13. Utthiye No Pamāyae.

14. सव्वतो पमत्तस्स भयं,
    सव्वतो अप्पमत्तस्स णत्थि भयं।

14. Savvato Pamattassa Bhayam,
    Savvato Appamatassa Nathi Bhayam.

15. समया धम्म मुदाहरे मुणी।

16. लाभालाभे सुहे-दुक्खे, जीविए-मरणे तहा।
समो निन्दा-पसंसासु, तहा माणावमाणओ।।

17. अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ।
वासी - चंदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा।।

18. अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ।।

19. अप्पा णई वेयरणी, अप्पा मे कूड़सामली।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं।।

20. जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ।।

21. खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई।।

22. अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

23. अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,
केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

24. अरहंते सरणं पवज्जामि,
सिद्धे सरणं पवज्जामि,
साहू- सरणं पवज्जामि,
केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

15. Samayā Dhamma Mudāhare Munee.

16. Lābhālābhe Suhe - Dukkhe,
Jeeviye Marane Tahā.
Samo Nindā - Pasansasu,
Tahā Mānāvamānao.

17. Anissio Iham loye,
Paraloye Anissio,
Vāsi Chandankappo Ya,
Asane Anasane Tahā.

18. Appā Kattā Vikattā Ya,
Duhān Ya Suhān Ya.
Appā Mittamamittam Cha,
Duppatthiya Supatthiyo.

19. Appā Nai Veyarnee,
Appā Me Kudsāmalee
Appā Kāmduha Dhenu,
Appā Me Nandanam Vanan.

20. Jo Sahassam Sahassānam,
Sangāme Dujjaye Jine.
Egam Jinejja Appānam,
Es Se Paramo Jao.

21. Khāmemi Savva Jeeve,
Savve Jeevā Khamantu Me.
Mittee Me Savva Bhooesu,
Veram Majjha Na Kenaee.

22. Arhantā Mangalam, Siddhā Mangālam,
Sāhoo Mangalam,
Kevali - Pannatto
Dhammo Mangalam.

23. Arhanta Loguttamā,
Siddhā Loguttama,
Sahoo loguttamā, Kevali –
Pannatto Dhammo Loguttamo.

24. Arhante Saranam Pavajjāmi,
Siddhe Saranam Pavajjāmi,
Sahoo Saranam Pavajjāmi,
Kevali - Pannattam Dhammam
Saranam Pavajjāmi.

वन्दना

भावभीनी वन्दना भगवान चरणों में चढ़ाएं।
शुद्ध ज्योतिर्मय निरामय रूप अपने आप पाएं।।

1. ज्ञान से निज को निहारें, दृष्टि से निज को निखारें।
आचरण की उर्वरा में, लक्ष्य-तरुवर लहलहाएं।।

2. सत्य में आस्था अचल हो, चित्त संशय से न चल हो।
सिद्ध कर आत्मानुशासन, विजय का संगान गाएं।।

3. बिन्दु भी हम सिन्धु भी हैं, भक्त भी भगवान भी हैं।
छिन्न कर सब ग्रंथियों को, सुप्त चेतन को जगाएं।।

4. धर्म है समता हमारा, कर्म समतामय हमारा।
साम्य योगी बन हृदय में, स्रोत समता का बहाएं।।

तर्ज : लक्ष्य है ऊंचा हमारा

आपको करना है

1. अर्हत् वन्दना को क्रमबद्ध एवं लयबद्ध सीखना है।
2. इसे शुद्ध उच्चारण के साथ सीखना है।

आपको ध्यान रखना है

1. वज्रासन मुद्रा में तन्मय होकर करना है।

Vandanā

Bhāva Bheenee Vandanā Bhagawān
Charanon Mein Chadāyen,
Shuddh Jyotirmaya Nirāmaya
Roop Apne Āp Pāyen.

1. Gyān Se Nij Ko Nihāren,
Drishti Se Nij Ko Nikhāren,
Ācharān Ki Urvarā Mein,
Lakshya Taruvar Lahalahāein.

2. Satya Mein Āsthā Achal ho,
Chitta Sanshay Se Na Chal ho,
Siddha Kar Ātmanushāsan,
Vijaya Kā Sangān Gāyen.

3. Bindu Bhi Ham Sindhu Bhi Hain,
Bhakta Bhi Bhagawān Bhi Hain,
Chhinna Kar Sab Granthiyon Ko,
Supt Chetan Ko Jagāein.

4. Dharm Hai Samatā Hamārā,
Karma Samtāmaya Hamārā,
Sāmya Yogi Ban Hridaya Mein,
Srot Samtā Kā Bahāein.

Tune : Lakshya Hai Unchā Hamārā

You have to do :

1. Arhat Vandanā to be learnt in tune and in order.
2. To be learnt with proper pronounciation.

You have to pay attention

1. It should be done in vajrāsan mudrā with concentration.

❖❖❖

पाठ - 4

महाप्रज्ञ अष्टकम् (युवाचार्य महाश्रमण)	MAHĀPRAGYA ASHTAKAM (Yuvācharyā Mahāshraman)

1. पुनीतान्तः प्रज्ञा गहनतम-तत्त्वेषु निपुणा,
श्रुतस्वाध्यायेन सुविदितरहस्यो विभुवरः।
प्रशस्या शास्त्राणां सुषमतर-सम्पादन-सृतिः,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

2. विशुद्धा सम्भाषा विनयति विबाधाः प्रतिपदम्,
प्रकाण्डं पाण्डित्यं श्रवति मुखपद्मात् प्रवचने।
प्रभावी व्याहारो जनयति समाधिं जनचये,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

3. गभीरं साहित्यं सुमतिविदुषां प्रीतिजनकम्,
प्रदत्ते सौहित्यं पठनपर-लोकाय विपुलम्।
विशिष्टश्लोकानां विरचनमकार्याशुकविना,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

4. तनावग्रस्तोऽयं विविधभययुक्तश्च मनुजः
विधत्ते सन्तापं प्रशमसमभावाद् विरहितः।
शुभं प्रेक्षाध्यानं सहजसुखदं विश्ववरदम्,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

1. Punitāntah Pragyā Gahanatam –
Tattweshu Nipunā,
Shrut Swādhyāyena Suvidit
Rahasyo Vibhuvarah.
Prashasyā Shāstrānām
Sushamatar-Sampādan -Sritih,
Mahāpragyah Poojyo Jinapati –
Saroopo Guruvarah.

2. Vishudhā Sambhashā Vinayati
Vibādhāh Pratipadam,
Prakāndam Pāndityam Shravati
Mukhpadmāt Pravachane.
Prabhāvi Vyāhāro Janayati
Samādhim Janachaye,
Mahāpragyah Poojyo Jinapati
Saroopo Guruvarah.

3. Gabheeram Sāhityam Sumati
Vidushām Preeti Janakam,
Pradatte Sauhityam Pathanpara -
Lokāya Vipulam.
Vishista Shlokānām Virachanama
Kāryāshukavinā,
Mahāpragyah Poojyo Jinapati
Saroopo Guruvarah.

4. Tanāva Grastoyam Vividha
Bhaya Yuktashcha Manujah
Vidhatte Santāpam Prashama
Samabhāvād Virahitah.
Shubham Prekshādhyānam Sahaja
Sukhadam Vishva Varadam,
Mahāpragyah Poojyo Jinapati
Saroopo Guruvarah.

5. विकासो बुद्धेः स्याद् विशदतरभावेन सहितः
पवित्रा लेश्या चेत् प्रखरमतिलाभोऽपि सुफलः।
शिवा शिक्षाक्षेत्रे बुधनरमता जीवनकला
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

5. Vikāso Buddheh Syād
Vishadatara Bhāven Sahitah,
Pavitra Leshyā Chet
Prakharmati Lābhoapi Suphalah.
Shivā Shikshā Kshetre
Budhanaramatā Jeevanakalā,
Mahāpragyah Poojyo Jinapati
Saroopo Guruvarah.

6. अहिंसा शक्तीनां भवतु समवायः सुखकरः
सदा यात्रा भूयात् विविधजनताया हितकृते।
जगत्यां तेजस्ते प्रहरतुतमां व्याप्त तिमिरम्
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

6. Ahimsā Shakteenām Bhavatu
Samavāyah Sukhakarah,
Sadā Yātrā Bhuyāt Vividha
Janatāyā Hitkrite.
Jagatyām Tejaste Praharatu
Tamām Vyāpt Timiram,
Mahāpragyah Poojyo Jinapati
Saroopo Guruvarah.

7. दयाभावः पुण्यो विलसतितरां पूतहृदये
प्रकामं वात्सल्यं प्रवहति सुधातुल्यममलम्।
प्रसन्ना मुद्रेयं स्फुरति वदने शान्ति-जननी
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

7. Dayā Bhāvah Punyo
Vilasatitarām Poota Hridaye,
Prakāmam Vātsalyam Pravahati
Sudhā Tulyamamalam.
Prasannā Mudreyam Sfurati
Vadane Shanti-Janani,
Mahāpragyah Poojyo Jinapati
Saroopo Guruvarah.

8. शरच्चन्द्रश्वेतो गण गगन भानुर्गतमलः
सुलब्धा प्रख्यातिः प्रणयन-कलायां कविकुले।
प्रदत्तं विज्ञेभ्यः कठिनतर पृच्छा-प्रतिवचः
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

8. Sharachchandrashweto Gana
Gagana Bhānurgatamalah,
Sulabdhā Prakhyātih Pranayana -
Kalāyām Kavikule.
Pradattam Vigyebhyah Kathintara
Prichchhā - Prativachah,
Mahāpragyah Poojyo Jinapati
Saroopo Guruvarah.

आपको करना है :

1. आपको ये श्लोक क्रमबद्ध सीखने हैं।
2. ये श्लोक शुद्ध उच्चारण के साथ सीखने हैं।

You have to do :

1. These verses to be learnt in order.
2. These verses to be learnt with proper pronounciation.

पाठ - 5

आचार्य श्री महाप्रज्ञ — ĀCHĀRYA SHRI MAHĀPRAGYA

प्रश्न 1. आचार्य श्री महाप्रज्ञ कौन हैं?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य हैं।

प्रश्न 2. आचार्य श्री महाप्रज्ञ का जन्म कब व कहां हुआ?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ का जन्म आषाढ कृष्णा13, वि. सं. 1977 (14 जून 1920) को टमकोर (राजस्थान) में हुआ।

प्रश्न 3. आचार्य श्री महाप्रज्ञ के माता-पिता का नाम क्या है?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ की माता का नाम बालूजी (साध्वीश्री) एवं पिता का नाम श्री तोलारामजी चोरड़िया है।

प्रश्न 4. आचार्य श्री महाप्रज्ञ का जन्म का नाम क्या था?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ के जन्म का नाम नथमल था।

प्रश्न 5. आचार्य महाप्रज्ञ की दीक्षा कब, कहां व किसके हाथों से हुई?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ की दीक्षा माघ शुक्ला दशमी वि. सं. 1987 को सरदारशहर में आचार्य श्री कालूगणी के हाथों से हुई।

प्रश्न 6. आचार्य श्री महाप्रज्ञ के शिक्षा गुरु कौन थे?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ के शिक्षा गुरु युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी थे।

प्रश्न 7. आचार्य श्री महाप्रज्ञ को 'महाप्रज्ञ' अलंकरण कब, कहां व किसने दिया?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ को 'महाप्रज्ञ' का अलंकरण कार्तिक शुक्ला 13 वि. सं. 2035 को गंगा शहर-बीकानेर में आचार्य श्री तुलसी द्वारा दिया गया।

Q 1. Who is Āchārya Mahāpragya?

Ans. Āchārya Mahāpragya is the tenth Āchārya of the Jain Shwetāmbar Terāpanth Dharmsangh.

Q 2. When and where was Āchārya Shri Mahāpragya born?

Ans. Āchārya Shri Mahāpragya was born on Āshād Krisnā 13, 1977 V.S. (14th June 1920) at Tamkor (Rajasthan).

Q 3. What are the names of Āchārya Shri Mahāpragya's parents?

Ans. His mother's name is Bāluji (Sādhvishri) and father's name is Shri Tolārāmji Choradiā.

Q 4. What was Āchārya Shri Mahāpragya's birthname?

Ans. Āchārya Shri Mahāpragya's birthname was Nathmal.

Q 5. When and where was Āchārya Shri Mahāpragya initiated and by whom?

Ans. Āchārya Shri Mahāpragya was initiated on Magh Sukla 10, in 1987 V.S. at Sardārshahar by Āchārya Shri Kālooganee.

Q 6. Who was Āchārya Mahāpragya's Sikshā guru?

Ans. Āchārya Shri Mahāpragya's Sikshā guru was Yug Pradhān Āchārya Shri Tulsi.

Q 7. When and where did Āchārya Shri Mahāpragya get the title of 'Mahāpragya' and who bestowed it on him?

Ans. Āchārya Shri Mahāpragya got the title of 'Mahapragya' on Kārtik Sukla 13, in 2035 V.S. at Gangāshahar, Bikāner by Āchārya Shri Tulsi.

प्रश्न 8. महाप्रज्ञ जी युवाचार्य कब व कहां बने?

उत्तर : महाप्रज्ञ जी माघ शुक्ला 7 वि. सं. 2035 (3 फरवरी 1979) को राजलदेसर में युवाचार्य बने।

प्रश्न 9. आचार्य श्री महाप्रज्ञ के जैन योग के क्षेत्र में योगदान पर आचार्य श्री तुलसी ने कौन-सा अलंकरण दिया?

उत्तर : 'जैन योग पुनरुद्धारक' अलंकरण प्रदान किया।

प्रश्न 10. महाप्रज्ञ जी का आचार्य पदाभिषेक कब व कहां हुआ?

उत्तर : महाप्रज्ञ जी का आचार्य पदाभिषेक माघ शुक्ला 6 वि. सं. 2051 (5 फरवरी 1995) को दिल्ली में हुआ।

प्रश्न 11. आचार्य श्री महाप्रज्ञ का 'युगप्रधान' पदाभिषेक कब व कहां हुआ?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ का 'युगप्रधान' पदाभिषेक भाद्रपद शुक्ला 9, वि. सं. 2056 (19 सितंबर 1999) को दिल्ली में हुआ।

प्रश्न 12. आचार्य श्री महाप्रज्ञ को 'युगप्रधान' पद किसने दिया?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ को 'युगप्रधान' पद युवाचार्य श्री महाश्रमण के नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ ने दिया।

प्रश्न 13. आचार्य श्री महाप्रज्ञ के प्रमुख अवदान कौन-कौन से हैं?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ के प्रमुख अवदान हैं – प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा समवाय और अहिंसा यात्रा।

प्रश्न 14. आचार्य श्री महाप्रज्ञ के उत्तराधिकारी कौन हैं?

उत्तर : युवाचार्य श्री महाश्रमण आचार्य श्री महाप्रज्ञ के उत्तराधिकारी हैं।

Q 8. When and where did Mahāpragya ji become Yuvāchārya?

Ans. On Magh Sukla 7, in 2035 V.S. (3rd February 1979) at Rājaladesar.

Q 9. What was the title given to Āchārya Shri Mahāpragya by Āchārya Shri Tulsi in connection with his contribution in the field of Jain Yog?

Ans. 'Jain Yog Punaruddharak'.

Q 10. When and where was Āchārya Shri Mahāpragya adorned with Āchāryaship?

Ans. On Magh Sukla 6, in 2051 V.S. (5th February 1995) in Delhi.

Q 11. When and where was Āchārya Shri Mahāpragya adorned with the title 'Yugpradhān'?

Ans. On Bhadrapad Sukla 9, in 2056 V.S. (19th September 1999) in Delhi.

Q 12. Who bestowed the title of 'Yugpradhān' to Āchārya Shri Mahāpragya?

Ans. The Terāpanth Dharmsangh bestowed the title of 'Yugpradhān' to Āchārya Shri Mahāpragya under the leadership of Yubāchārya Shri Mahāshraman.

Q 13. What are the main contributions of Āchārya Shri Mahāpragya?

Ans. The main contributions of Āchārya Shri Mahāpragya are Prekshā Dhyān, Jeevan Vigyān, Ahimsā Samvāy & Ahimsā Yātrā.

Q 14. Who is the successor of Ācharya Shri Mahāpragya?

Ans. Yuvāchārya Shri Mahāsraman is the successor of Āchārya Shri Mahāpragya.

पाठ - 6

आचार्य श्री महाश्रमण — ĀCHĀRYA SHRI MAHĀSHRAMAN

प्रश्न 1. आचार्य श्री महाश्रमण किनके उत्तराधिकारी हैं?

उत्तर : आचार्य श्री महाश्रमण आचार्य श्री महाप्रज्ञ के उत्तराधिकारी हैं।

Q 1. Of whom is Āchārya Shri Mahāshraman the Successor?

Ans. Ācharya Shri Mahāshraman is the successor of Āchārya Shri Mahāpragya.

प्रश्न 2. आचार्य श्री महाश्रमण का जन्म कब व कहां हुआ?

उत्तर : आचार्य श्री महाश्रमण का जन्म वैशाख शुक्ला, वि. सं. 2019 (13 मई 1962) को सरदार शहर में हुआ।

Q 2. When and where was Āchārya Shri Mahāshraman born?

Ans. Āchārya Shri Mahāshraman was born on Vaishākh Sukla 9, in 2019 V.S. (13th May 1962) in Sardārshahar.

प्रश्न 3. आचार्य श्री महाश्रमण के माता-पिता का नाम क्या है?

उत्तर : आचार्य श्री महाश्रमण की माता का नाम श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. नेमादेवी व पिता का नाम स्व. श्री झूमरमलजी दूगड़ है।

Q 3. What are the names of Āchārya Shri Mahāshraman's parents?

Ans. His mother's name is Sradhā Ki Pratimoorti late Nemā Devi and his father's name is late Shri Jhumarmalji Dugar.

प्रश्न 4. आचार्य श्री महाश्रमण की दीक्षा कब व कहां हुई?

उत्तर : आचार्य श्री महाश्रमण की दीक्षा वैशाख शुक्ला 14 वि. सं. 2031 (5 मई 1974) को सरदारशहर में हुई।

Q 4. When and where was Āchārya Shri Mahāshraman initiated?

Ans. Āchārya Shri Mahāshraman was initiated on Vaishākh Sukla 14, 2031 V.S. (5th May 1974) at Sardārshahar.

प्रश्न 5. आचार्य श्री महाश्रमण को दीक्षा किसने प्रदान की?

उत्तर : आचार्य श्री महाश्रमण को दीक्षा मुनि श्री सुमेरमलजी (लाडनूं) ने आचार्य श्री तुलसी के आदेशानुसार प्रदान की।

Q 5. Who initiated Āchārya Shri Mahāshraman?

Ans. Āchārya Shri Mahāshraman was initiated by Muni Shri Sumermalji (Lādnun) by the orders of Āchārya Shri Tulsi.

प्रश्न 6. आचार्य श्री महाश्रमण की दीक्षा के समय उम्र क्या थी?

उत्तर : दीक्षा के समय आचार्य श्री महाश्रमण की उम्र बारह वर्ष थी।

Q 6. At what age was Āchārya Shri Mahāshraman initiated?

Ans. Āchārya Shri Mahāshraman was initiated at the age of Twelve years.

❖❖

प्रश्न 7. आचार्य श्री महाश्रमण महाप्रज्ञ जी के अंतरंग सहयोगी कब व कहां बने?

उत्तर : माघ शुक्ला 7, वि. सं. 2042, उदयपुर में।

प्रश्न 8. आचार्य श्री महाश्रमण साझपति कब व कहां बने?

उत्तर : आचार्य श्री महाश्रमण वैशाख शुक्ला 4 वि. सं. 2042, ब्यावर में साझपति बने।

प्रश्न 9. आचार्य श्री को 'महाश्रमण' पद कब व कहां मिला?

उत्तर : आचार्य श्री को भाद्रपद शुक्ला 9, वि. सं. 2046 (9 सितंबर 1989) में लाडनूं में आचार्य श्री तुलसी द्वारा 'महाश्रमण' पद दिया गया।

प्रश्न 10.'महाश्रमण' बनने के समय उनकी उम्र क्या थी?

उत्तर : 'महाश्रमण' बनने के समय उनकी उम्र अट्ठाईस वर्ष थी।

प्रश्न 11.वे महाश्रमण पद पर कितने वर्ष रहे?

उत्तर : वे आठ वर्षों तक महाश्रमण के पद पर रहे।

प्रश्न 12.वे 'युवाचार्य' कब व कहां बने?

उत्तर : वे भाद्रपद शुक्ला 12, वि. सं. 2054 (14 सितंबर 1997) में गंगाशहर, बीकानेर में 'युवाचार्य' बने।

प्रश्न 13.उन्हें 'युवाचार्य' पद किसने दिया?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने उन्हें 'युवाचार्य' पद दिया।

प्रश्न 14.आचार्य श्री महाश्रमण का मूल नाम क्या था?

उत्तर : आचार्य श्री महाश्रमण का मूल नाम गृहस्थावस्था में मोहन व मुनि अवस्था में मुनि मुदित कुमार था।

प्रश्न 15.आचार्य श्री महाप्रज्ञ को 'युगप्रधान' पद प्रदान करने का निर्णय सबसे पहले किसने लिया?

उत्तर : आचार्य श्री महाप्रज्ञ को 'युगप्रधान' पद प्रदान करने का निर्णय सबसे पहले आचार्य श्री महाश्रमण ने लिया।

Q 7. When and where did Āchārya Shri Mahāshraman become an intimate companion of Mahāpragyaji?

Ans. On Magh Sukla 7, 2042 V.S. at Udaipur.

Q 8. When and where did Ācharya Shri Mahāshraman become group leader?

Ans. On Vaishakh Sukla 4, 2042 V.S. at Beawar.

Q 9. When and where did he receive the post of Mahāshraman?

Ans. On Bhādrapad Sukla 9, 2046 V.S. (9th September 1989) at Lādnun he was given the post of 'Mahāshraman' by Āchārya Shri Tulsi.

Q 10. At what age did he become Mahāshraman?

Ans. He was twenty eight years when he became Mahāshraman.

Q 11. For how long did he stay as Mahāshraman?

Ans. He stayed eight years as Mahāshraman.

Q 12. When and where did he become 'Yuvacharya'?

Ans. Bhādrapad Sukla 12, 2054 V.S. (14th September 1997) at Gangashahar, Bikaner.

Q 13. Who bestowed the 'Yuvacharya' post to him?

Ans. Āchārya Shri Mahāpragya bestowed him the post of 'Yuvacharya'.

Q 14. What was the original name of Āchārya Shri Mahāshraman?

Ans. The original name of Āchārya Shri Mahāshraman was Mohan at home and as a monk he was Muni Mudit Kumar.

Q 15. Who was the first person who decided to give the title of Yugpradhān to Āchārya Shri Mahāpragya?

Ans. Āchārya Shri Mahāsraman was the first person who decided to give the title of Yugpradhān to Āchārya Shri Mahāpragya.

पाठ - 7

सामान्य ज्ञान GENERAL KNOWLEDGE

प्रश्नोत्तर के रूप में — **In the form of Question Answers**

1.	तुम्हारी गति?	मनुष्य।	1.	Your gati?	Manushya
2.	जाति?	पंचेन्द्रिय।	2.	Jāti?	Panchendriya
3.	काय?	त्रस।	3.	Kāy?	Tras
4.	इन्द्रिय?	पांच।	4.	Indriya?	Five
5.	पर्याप्ति?	छह।	5.	Paryāpti?	Six
6.	प्राण?	दस।	6.	Prān?	Ten
7.	शरीर?	तीन - औदारिक, तैजस, कार्मण।	7.	Shareer?	Three -- Audārik, Taijas, Kārman.
8.	योग?	नौ - चार मन, चार वचन, एक काय – औदारिक।	8.	Yog?	Nine - Char Man, Char Vachan, Ek Kāy - Audārik
9.	उपयोग?	चार – मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन।	9.	Upyog?	Four - Matijnān, Shrutjnān, Chakshu Darshan, Achakshu Darshan.
10.	कर्म?	आठ।	10.	Karm?	Eight
11.	गुणस्थान?	श्रावक में पांचवां, साधु में छठा।	11.	Gunasthān?	Shrāvak Mein Pānchwān, Sadhu Mein Chhathā.
12.	जीव का भेद?	एक – चौदहवां।	12.	Jeev Kā Bhed?	One - Chaudahwān
13.	दंडक?	एक – इक्कीसवां।	13.	Dandak?	One - Ikkiswān
14.	विषय?	तेईस।	14.	Vishay?	Twenty Three
15.	आत्मा?	साधु में आठ, श्रावक में सात चारित्र को छोड़कर।	15.	Atma?	Sadhu mein Āth Shravak Mein Sāt Charitra Ko Chhodkar

16. मिथ्यात्व के भेद?	व्यवहार से नहीं।	16. Mithyātwa Ke Bhed?	Vyavahār Se Nahin
17. लेश्या?	छह।	17. Leshya?	Six
18. दृष्टि?	व्यवहार से एक-सम्यक् दृष्टि।	18. Drishti?	Vyavahār Se Ek - Samyak Drishti
19. ध्यान?	तीन - आर्त्त, रौद्र, धर्म्य।	19. Dhyān?	Three - Ārtt, Raudra, Dharmya.
20. द्रव्य?	एक - जीवद्रव्य।	20. Dravya?	One - Jeevdravya
21. राशि?	जीव राशि।	21. Rashi?	Jeev Rashi
22. बारह व्रत?	श्रावक में।	22. Barah Vrat?	Shrāvak Mein
23. पांच महाव्रत?	साधु में।	23. Pānch Mahāvrat?	Sādhu Mein
24. पांच चारित्र?	साधु में पाते हैं। श्रावक में देशचारित्र है।	24. Pānch Chāritra?	Sādhu Mein Pate Hain. Shrāvak Mein Desh Chāritra Hai.

❖❖❖

पाठ – 8

प्रेक्षाध्यान : उपयोगी प्रयोग

PREKSHĀ DHYĀN : USEFUL PRACTICE

हर बालक यह चाहता है कि वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त करे। इसके लिए स्मरण शक्ति एवं ज्ञान का विकास आवश्यक है तथा क्रोध पर विजय पानी है। प्रेक्षाध्यान में इसके विभिन्न प्रयोग हैं –

स्मरण शक्ति बढ़ाने का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि : नाक से श्वास लें, श्वास छोड़ते हुए नाक से भ्रमर की भांति गुंजन करें। इसमें आसन स्थिर हो, मेरूदंड सीधा रहे, आंखें कोमलता से बंद रहें व मुंह बंद रहे। ऐसी ध्वनि नौ बार करें।
2. दीर्घ श्वास के साथ मस्तक पर पीले रंग का ध्यान करें। अवधि - 5 मिनट
3. 'मेरी स्मरण शक्ति विकसित हो रही है' – यह सुझाव बार-बार मस्तिष्क को दें। अवधि – 5 मिनट।
4. ज्ञान मुद्रा का प्रयोग करना।

ज्ञान विकास का प्रयोग

ज्ञान केन्द्र पर सूर्यमुखी फूल की तरह पीले रंग का ध्यान करें।

क्रोध शांत करने का प्रयोग

ज्योति केन्द्र पर चमकते सफेद रंग का ध्यान करें।

आपको करना है

1. आप अपने प्रशिक्षक से ये प्रयोग अच्छी तरह से समझें
2. आप इन प्रयोगों को नियमित करें।

आप ध्यान रखें

1. प्रेक्षाध्यान का प्रारंभ आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने किया।
2. प्रेक्षाध्यान आपको महान बनाता है।

Every child wants success in his life. For this it is necessary for him to improve his memory and develop his knowledge and also to control anger. These are various exercises in Prekshā Dhyān :

Method for improving memory

1. Mahāprān Dhwani - Breathe in through the nose and breathe out through the nose buzzing like a bee. Posture should be still, back straight, eyes shut softly and mouth closed. This should be done nine times.
2. Meditate on the forehead with yellow colour while breathing deeply. Time : 5 minutes.
3. 'My memory is increasing' - This suggestion should be given to the head repeatedly. Time : 5 Minutes.
4. Practice of Gyān Mudrā.

Method for increase of knowledge

Concentrate on the Gyān Kendra with yellow colour like sunflower.

Method for controlling anger

Concentrate on Jyoti Kendra with a shining white colour.

You have to do :

1. You must understand these methods from your trainer properly.
2. You must practice these methods regularly.

You have to pay attention :

1. Prekshā Dhyān was started by Āchārya Shri Mahāpragya.
2. Prekshā Dhyān makes you great.

पाठ - 9

विद्यार्थी अणुव्रत STUDENTS ANUVRAT

अणुव्रत का लक्ष्य

- जाति, रंग, सम्प्रदाय, देश और भाषा का भेद-भाव न रखते हुए मनुष्य मात्र को आत्म-संयम की प्रेरणा।
- मैत्री, एकता, शान्ति, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा।

Aim of Anuvrat

- To inspire humans for self control without discriminating between them in caste, colour, creed, country or language.
- Establishment of friendship, unity, peace, religious and moral values.

विद्यार्थी अणुव्रत

- मैं परीक्षा में अवैध उपायों का सहारा नहीं लूंगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।
- मैं अश्लील शब्दों का प्रयोग नहीं करूंगा व अश्लील साहित्य नहीं पढ़ूंगा, अश्लील चल-चित्र नहीं देखूंगा।
- मैं मादक व नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा।
- मैं रुपये या अन्य प्रलोभन से मत (वोट) न लूंगा और न दूंगा।
- मैं दहेज से अनुबंधित एवं प्रदर्शन से युक्त विवाह नहीं करूंगा और न उसमें भाग लूंगा।
- मैं माता-पिता व गुरुजनों के प्रति विनम्र रहूंगा।
- मैं बड़े वृक्ष नहीं काटूंगा और प्रदूषण नहीं फैलाऊंगा।

Students Anuvrat

- I will not opt for unfair means in the examination.
- I will not participate in violent and destructive activities.
- I will not use abusive words, I will not read vulgar literature or see obscene movies.
- I will not consume intoxicating and alcoholic products.
- I will not cast vote nor ask for vote by bribery in cash or in kind.
- I will not ask for dowry and neither will I participate in any showful wedding.
- I will be humble towards my parents and gurus.
- I will not cut big trees and will not spread pollution.

आपको ध्यान रखना है

1. इन नियमों का पालन करना है।

You have to pay attention :

1. These rules have to be followed.

शिक्षा के दो रूप हैं - ग्रहण शिक्षा, आसेवन शिक्षा। सूत्र-पाठ का शुद्ध उच्चारण व उसका अर्थबोध ग्रहण शिक्षा है। जो कुछ सुना, समझा व याद किया, उसे जीवन में उतारना आसेवन शिक्षा है।

वृक्ष की जड़ सूख जाने पर शाखा-प्रशाखा सब कुछ सूख जाती है। व्यक्ति के भीतर से विनय का गुण निकल जाने पर सब गुण समाप्त हो जाते हैं।

विद्यार्थी जीवन ही, सारे जीवन की नींव।
दिखलाना है तुम्हें देश को, जो आदर्श सजीव।।
विद्या और विनय का संयोग सोने में सुगंध है।

चारों ओर विकृति के संस्कार हावी हैं। नैतिक मूल्यों को झकझोरने वाले साधन भी प्रचुर मात्रा में हैं। लौकिक विद्या के साथ भोगवाद का क्रम भी तीव्र गति से बढ़ रहा है। ऐसे में ज्ञानशाला एक शक्तिशाली उपक्रम है।

- ज्ञानशाला को आधुनिक एवं वैज्ञानिक रूप दिया जाए।
- आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि का विकास हो।
- उसमें तत्त्व व दर्शन के साथ आचार संहिता भी जोड़ी जाए।
- ज्ञानशाला मात्र शिक्षण का उपक्रम ही नहीं जीवन विज्ञान है।

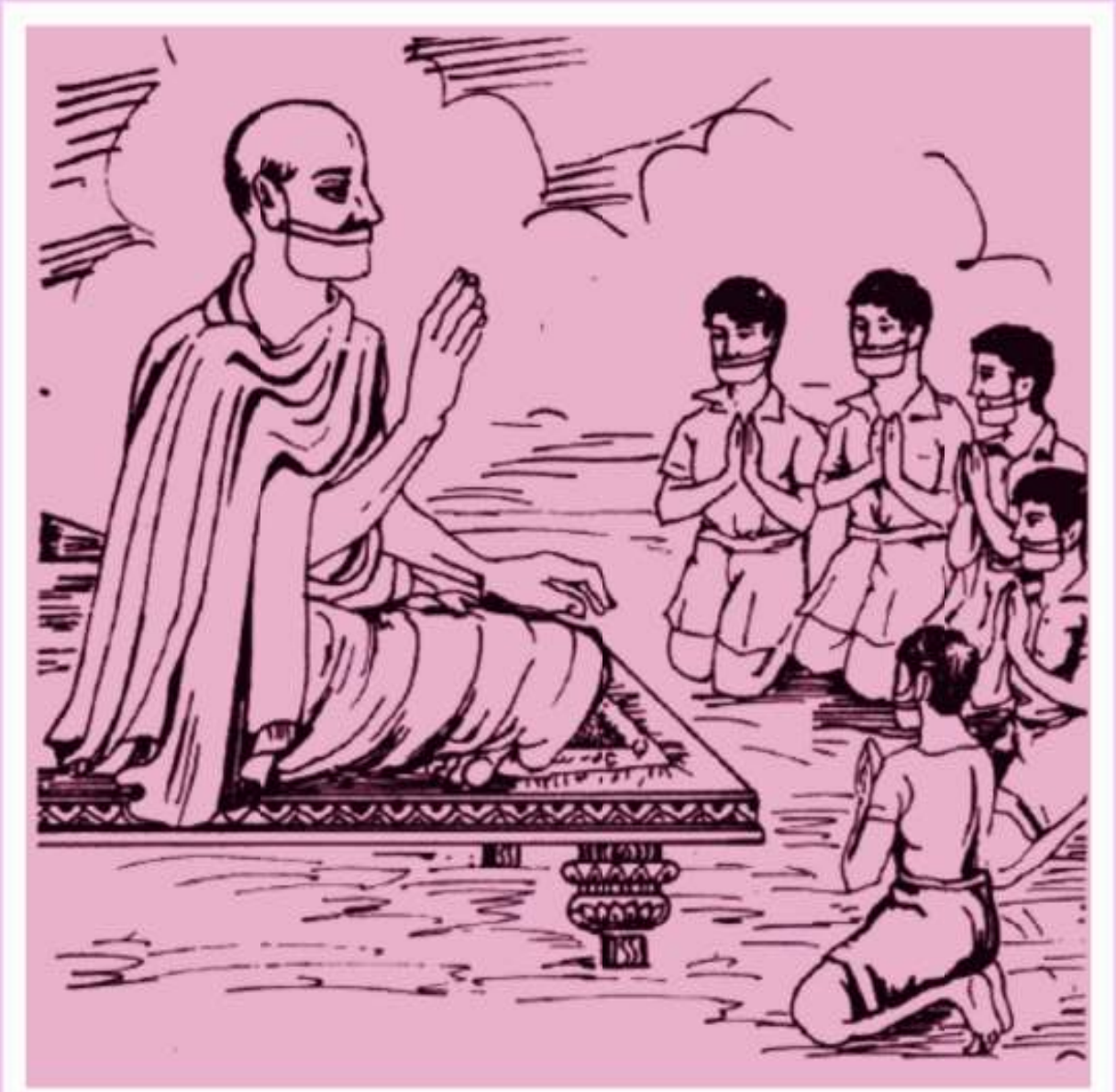

युग पुरुष के अमृत बिन्दु

शिक्षा की दुर्गति या असद्गति देख मेरे मन में बच्चों को संस्कारी बनाने की बार-बार आ रही है। संस्कारों के बिना शिक्षा केवल भार बन जाएगी। गधे पर चंदन का भार डाल दिया जाए तो वह भार का ही अनुभव करेगा सुगन्ध का नहीं।

प्रत्येक अभिभावक को अपने बालकों को लौकिक शिक्षा के साथ-साथ संस्कारी बनाने के लिए ज्ञानशाला एवं आध्यात्मिक शिविरों में अवश्य भेजना चाहिए।

- आचार्य तुलसी